IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

शिक्षकों के बर्नआऊट के प्रथम आयाम गैर सिद्धि और कार्यसंतुष्टि पर अध्ययन

डॉ. पदमा अग्रवाल
प्राध्यापक (शिक्षा संकाय)
मनसा शिक्षा महाविद्यालय, कुरुद
भिलाइ नगर, (छ.ग.)

श्रीमती रंजना पटेल
सहायक प्राध्यापक (शिक्षा संकाय)
मनसा शिक्षा महाविद्यालय, कुरुद
भिलाइ नगर, (छ.ग.)

सारांश

प्रस्तुत अध्ययन में छत्तीसगढ़ के शिक्षकों की गैर सिद्धि और कार्य संतुष्टि का अध्ययन किया गया है। इस अध्ययन हेतु दुर्ग जिले के 450 शिक्षकों को स्तरीकृत यादृच्छिक विधि द्वारा लिया गया है। शिक्षकों की गैर सिद्धि (बर्नआऊट का प्रथम आयाम) के मापन हेतु श्री प्रो. करूणा शंकर मिश्रा द्वारा निर्मित बर्नआऊट इन्वेन्टरी का उपयोग किया गया तथा कार्य संतुष्टि के मापन हेतु श्री डॉ. प्रमोद कुमार डी. एन. मुथा द्वारा निर्मित कार्य संतुष्टि प्रश्नावली का उपयोग किया गया। सांख्यिकीय विश्लेषण हेतु चतुर्दिश प्रसरण विश्लेषण की गणना की गई। अध्ययन के निष्कर्ष यह बताते हैं कि शिक्षकों की गैर सिद्धि का कार्य संतुष्टि पर सार्थक प्रभाव नहीं पाया गया।

प्रस्तावना

शिक्षा आजीवन चलने वाली एक सतत प्रक्रिया है। शिक्षा ही एक ऐसा माध्यम है जो मनुष्य को आचार, विचार में निपुण बनाती है। शिक्षा के अभाव में जीवन की कल्पना ही मुश्किल है। शिक्षण कार्य एक कौशल है जो मनुष्य को वरदान के रूप में मिला है। शिक्षण कार्य का मुख्य बिंदु शिक्षक होता है। शिक्षक उस मूर्तिकार की तरह हैं, जो छात्रों के भविष्य को आकार देकर उन्हें एक जिम्मेदार नागरिक बनाते हैं। शिक्षक अपने कर्तव्यों का निष्ठा एवं ईमानदारी से निर्वहन करते हैं। परन्तु कुछ विपरीत परिस्थितियाँ उनके मार्ग में व्यवधान उत्पन्न करती हैं, जिसके फलस्वरूप शिक्षण कार्य प्रभावित होता है। आज के आधुनिक युग में शिक्षण कार्य एक व्यवसाय बन चुका हैं। वर्तमान समय में शिक्षा तथा शिक्षकीय कार्य अपने वास्तविक लक्ष्य से भटक जाता है। वर्तमान युग प्रतिस्पर्धात्मक युग है जहाँ शिक्षकों के समक्ष नित नई चुनौतियाँ आती रहती हैं। अत्याधिक कार्यभार विद्यालय प्रशासन द्वारा शिक्षकों के साथ तानाशाही, अनुचित वातावरण आदि विद्यमान होने पर शिक्षकों में कार्य के प्रति असंतोष एवं बर्नआऊट जैसी समस्याओं का सामना करना पड़ता है। यदि शिक्षक अपने कार्य में असंतोष व नीरसता का अनुभव करते हैं, निश्चित रूप से शिक्षकों के व्यवहार तथा उनकी मनःस्थिति में भी परिवर्तन होने की संभावना हो जाती ह।

शिक्षकों के प्रथम आयाम गैर सिद्धि के अंतर्गत शिक्षक प्रायः प्रयास करने से बचता है। लक्ष्य प्राप्ति की तरफ शिक्षक का रुझान कम होने लगता है। गैर सिद्धि से ग्रसित शिक्षक अपने कामों का पूरी लगन व मेहनत से नहीं करते ह। कार्य करते समय त्रुटियाँ एवं अधूरा काम, गैर सिद्धि को संदर्भित करता है। कभी कभी गैर सिद्धि के कारणवश शिक्षकों को कार्य को समझने में कठिनाइयाँ महसूस होती हैं। परिणामस्वरूप चिड़चिड़ापन, जो बर्नआऊट को जन्म देता है। गैर सिद्धि शिक्षकों को अपने कार्य के प्रति समपर्ण हीन बना देता है। गैर सिद्धि होने से शिक्षक अपने कार्यों की योजना बनाने में असक्षम हो जाते हैं गैर सिद्धि के फलस्वरुप शिक्षक वांछित सफलता प्राप्त नहीं कर पाते हैं। शिक्षकों में विफलता का कारण गैर सिद्धि है, जो शिक्षकों को लक्ष्य विहीन तथा अनुसरण करने की दिशा से भ्रमित कर देती है। गैर सिद्धि शिक्षकों को गैर–पूर्ति , निराशा और बर्नआऊट की ओर ले जाती है। बर्नआऊट एक ऐसी अवधारणा है, जो शिक्षकों में अतिभारित काम, आत्मसम्मान में कमी, भावनात्मक थकावट आदि के रूप में पाई जाती है। बर्नआऊट की स्थिति में शिक्षकों को विद्रोही छात्रों से निपटने में कठिनाई महसूस होती है। बर्नआऊट होने के दो कारण हो सकते हैं; मानसिक एवं शारीरिक शिक्षक का पूरा जीवन भाग–दौड़ और संघर्ष से युक्त होता है जो शिक्षकों को मानसिक एवं शारीरिक रूप से थका देता है। इन्हीं दो कारणों की वजह से शिक्षकों या अन्य व्यवसाइयों में बर्नआउट की सम्भावना अधिक होती है। बर्नआऊट आगे चलकर मानसिक तनाव या स्ट्रेस का कारण बनता है। बर्नआऊट के परिणामस्वरूप शिक्षकों के व्यवहार में चिड़चिड़ापन, ऊर्जाविहीन या असहाय आदि जैसी समस्याएँ नजर आती हैं। बर्नआऊट के लक्षण शनैः शनैः बढ़ते हैं, जिन पर शिक्षकों का ध्यान प्रायः नहीं जाता है। यदि शिक्षक बर्नआऊट से ग्रस्त होते हैं तो स्वाभाविक रूप से उनका शिक्षण भी नकारात्मक रूप से प्रभावित होता है। अतः प्रशासन द्वारा ऐसे महत्वपूर्ण कदम उठाये जाने चाहिए, जिससे शिक्षकों के कार्यभार व अन्य समस्याओं का समाधान हो सके।

कार्य संतुष्टि वर्तमान समय का प्रचलित एवं महत्वपूर्ण शब्द है। वर्तमान समय में यह सर्वमान्य है कि कार्य विशेष की सफलता उस कार्य को करने वाले व्यक्ति की पूर्ण संतुष्टि, आंशिक संतुष्टि या पूर्णतः असंतुष्टि पर निर्भर करता है। यदि व्यक्ति जो भी कार्य करता है और उससे उसे संतुष्टि प्राप्त होती है तो वह उस कार्य के प्रति समर्पित होगा। वह कार्य को पूर्ण रूचि के साथ करेगा तथा परिश्रत भी करेगा। इसके विपरीत यदि व्यक्ति को कार्य करने मे असंतुष्टि होगी तो उस कार्य को करने में ना तो वह परिश्रत करेगा और ना ही उस वह कार्य करनें में रूचि होगी। कार्य संतुष्टि होने पर कार्य निष्ठापूर्ण भी किया जायेगा।

कार्य संतुष्टि दो शब्दों का मेल है अर्थात् दो शब्दो से मिलकर बना है कार्य और संतुष्टि। कार्य का तात्पर्य यहां ऐसे कार्य से है जो व्यक्ति द्वारा कार्य किया जा रहा है उस कार्य से वह अपना जीविकोपार्जन का या स्वयं के जीवन यापन के लिये धन की प्राप्ती करता है। धनोपर्जान शब्द विवादस्पद है। संतुष्टि भारतीय दार्शमिकों के अनुसार त्याग ही संतोष है। वर्तमान में बहुत ही कम ऐसे व्यक्ति हैं जो संतुष्टि की चरम सीमा तक पहुंच पाते है। प्रायः यह देखने को मिलता है कि विरले व्यक्ति अपने कार्य से पूर्णतः संतुष्ट है। संतुष्टि के संबंध में यह कहा जा सकता है कि संतुष्टि का अर्थ संतोष अथवा प्रसन्नता है। इस प्रकार कार्य–संतुष्टि एक आंतरिक गुण होता है ना की बाह्य। इसका संबंध व्यक्ति के अंतर्मन से होता है। प्रायः यह देखा जाता है कि बहुत से ऐसे व्यक्ति है जो अपनी श्रेष्ठतम अवस्था में होते हुए भी पूर्णतः संतुष्ट नहीं है। इसके विपरीत अनेक ऐसे व्यक्ति भी हैं जो प्रतिकूल परिस्थितियों में होने पर भी कार्य से संतुष्ट होते है। कार्य संतुष्टि में भौतिकता को सम्मिलित किया गया है। वर्तमान समय की परिस्थितियों से कोई भी अनुमति नही है वर्तमान समय भौतिकता से परिपूर्ण है।

उद्देश्य

1. शिक्षकों की गैर सिद्धि, लिंग, परिवेश एवं अनुभव का उनकी कार्य संतुष्टि पर पड़ने वाले मुख्य एवं अंतक्रियात्मक प्रभाव का अध्ययन करना है।

परिकल्पना

H_1 शिक्षकों की गैर सिद्धि का कार्यसंतुष्टि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया जाएगा।
H_2 शिक्षकों के लिंग का कार्यसंतुष्टि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया जाएगा।
H_3 शिक्षकों के परिवेश का कार्यसंतुष्टि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया जाएगा।
H_4 शिक्षकों के अनुभव का कार्यसंतुष्टि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया जाएगा ।
H_5 शिक्षकों की गैर सिद्धि, लिंग एवं उनकी अंतक्रिया का कार्यसंतुष्टि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया जाएगा ।
H_6 शिक्षकों की गैर सिद्धि, परिवेश एवं उनकी अंतक्रिया का कार्यसंतुष्टि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया जाएगा ।
H_7 शिक्षकों की गैर सिद्धि, अनुभव एवं उनकी अंतक्रिया का कार्यसंतुष्टि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया जाएगा ।
H_8 शिक्षकों के, लिंग, परिवेश, अनुभव एवं उनकी अंतक्रिया का कार्यसंतुष्टि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया जाएगा ।
H_9 शिक्षकों की गैर सिद्धि, लिंग, परिवेश, अनुभव एवं उनकी अंतक्रिया का कार्यसंतुष्टि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया जाएगा ।

अध्ययन की परिसीमा

1. प्रस्तावित अध्ययन में केवल दुर्ग जिले के तीन विकासखंड (दुर्ग, पाटन एवं धमधा) के शिक्षकों को चयनित किया जायेगा।
2. प्रस्तुत अध्ययन हेतु उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों को चयनित किया गया है ।
3. प्रस्तुत अध्ययन में शिक्षकों का चयन लिंग, परिवेश, एवं अनुभव के आधार पर किया गया ह ।

शोध विधि

न्यादश

न्यादर्श हेतु दुर्ग जिले के 3 विकासखंडों (दुर्ग, पाटन एवं धमधा) के 450 शिक्षकों का चुनाव सर्वेक्षण विधि द्वारा किया गया।

उपकरण

प्रस्तुत शोध अध्ययन हेतु शिक्षकों की गैर सिद्धि, के मापन हेतु श्री प्रो. करूणा शंकर मिश्रा द्वारा निर्मित बर्नआऊट इन्वेन्टरी का उपयोग किया गया तथा कार्य संतुष्टि के मापन हेतु श्री डॉ. प्रमोद कुमार डी. एन. मुथा द्वारा निर्मित कार्य संतुष्टि प्रश्नावली का उपयोग किया गया।

प्रदत्तों का सांख्यिकी विश्लेषण एवं व्याख्या

संकलित प्रदत्तों का सांख्यिकी विश्लेषण हेतु 2x2x2x2 चतुर्दिश प्रसरण विश्लेषण की गणना की गई है:

H_1 शिक्षकों की गैर सिद्धि, का कार्यसंतुष्टि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया जाएगा।

तालिका क्रमांक–1
शिक्षकों की गैर सिद्धि, लिंग, परिवेशएवं अनुभव के लिए
2x2x2x2 के प्रसरण विश्लेषण का सारांश

स्त्रोत	वर्गों का योग	df	वर्ग का औसत	F
गैर सिद्धि	29.555	13	2.273	•.559
लिंग	8.224	1	8.224	•.2.023
परिवेश	104.964	1	104.964	**25.818
अनुभव	.007	1	.007	•.002
गैर सिद्धि* लिंग	17.704	9	1.967	•.484
गैर सिद्धि* परिवेश	18.741	7	2.677	•.659
गैर सिद्धि * अनुभव	12.876	10	1.288	•.317
लिंग * परिवेश * अनुभव	5.287	1	5.287	•1.300
गैर सिद्धि * लिंग * परिवेश * अनुभव	7.297	4	1.824	•.449
त्रुटि	1553.032	382	4.066	
योग	303310.000	450		
संशोधित योग	2325.458	449		

**0.01 स्तर पर सार्थकता •सार्थकता नहीं

तालिका क्रमांक–1 के निरीक्षण से यह ज्ञात होता है कि गैर सिद्धि के लिए F का मान .559, df 1/382 है, जो किसी भी स्तर पर सार्थक नहीं है। अतः शून्य परिकल्पना "शिक्षकों की गैर सिद्धि का कार्यसंतुष्टि पर कोई साथक प्रभाव नहीं पाया जाएगा" को स्वीकृत किया जाता है।

H_2 शिक्षकों के लिंग का कार्यसंतुष्टि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया जाएगा।
तालिका क्रमांक–1 के निरीक्षण से यह स्पष्ट होता है कि शिक्षकों के लिंग के लिए F का मान 2.02, df 1/382 है, जो किसी भी स्तर पर सार्थक नहीं ह। अतः शून्य परिकल्पना ''शिक्षकों के लिंग का कार्यसंतुष्टि पर साथक प्रभाव नहीं पाया जाएगा'' को स्वीकृत किया जाता है।

H_3 शिक्षकों के परिवेश का कार्यसंतुष्टि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया जाएगा।
तालिका क्रमांक–1 के निरीक्षण से यह स्पष्ट होता है कि शिक्षकों के परिवेश के लिए F का मान 25.81, df 1/382 है, जो 0.01 स्तर पर सार्थक है। इससे यह स्पष्ट होता है कि शिक्षकों के परिवेश का कार्यसंतुष्टि पर सार्थक प्रभाव पाया गया। अतः शून्य परिकल्पना ''शिक्षकों के परिवेश का कार्यसंतुष्टि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया जाएगा'' को अस्वीकृत किया जाता है। स्पष्ट है कि शिक्षकों के परिवेश का कार्यसंतुष्टि के मध्यमान अंक में अंतर पाया गया। तालिका से यह ज्ञात होता है कि ग्रामीण परिवेश के शिक्षकों का मध्यमान 25.00 प्राप्त हुआ है एवं शहरी परिवेश के

शिक्षकों का मध्यमान 27.21 प्राप्त हुआ है। इस कथन से यह स्पष्ट होता है कि शहरी परिवेश के शिक्षकों की कार्यसंतुष्टि ग्रामीण परिवेश के शिक्षकों की तुलना में अधिक पायी गयी।

H_4 शिक्षकों के अनुभव का कार्यसंतुष्टि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया जाएगा।

तालिका क्रमांक–1 के निरीक्षण उपरांत यह ज्ञात होता है कि शिक्षकों के अनुभव के लिए F का मान 0.02, df 1/382 है, जो किसी भी स्तर पर सार्थक नहीं है। अर्थात् शिक्षकों के अनुभव का कार्यसंतुष्टि पर सार्थक प्रभाव नहीं पाया गया। अतः शून्य परिकल्पना ''शिक्षकों के अनुभव का कार्यसंतुष्टि पर सार्थक प्रभाव नहीं पाया जाएगा'' को स्वीकृत किया जाता है।

H_5 शिक्षकों की गैर सिद्धि, लिंग एवं उनकी अंतक्रिया का कार्यसंतुष्टि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया जाएगा ।

तालिका क्रमांक–1 के निरीक्षण उपरांत यह ज्ञात होता है कि गैर सिद्धि, एवं लिंग के मध्य अंतक्रिया के लिए F का मान .484, df 1/382 है, जो किसी भी स्तर पर सार्थक नहीं है। अर्थात् शिक्षकों के गैर सिद्धि एवं लिंग के मध्य अंतक्रिया का कार्यसंतुष्टि पर सार्थक प्रभाव नहीं पाया गया। अतः शून्य परिकल्पना ''शिक्षकों की गैर सिद्धि, लिंग एवं उनकी अंतक्रिया का कार्यसंतुष्टि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया जाएग'' को स्वीकृत किया जाता है।

H_6 शिक्षकों की गैर सिद्धि, परिवेश एवं उनकी अंतक्रिया का कार्यसंतुष्टि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया जाएगा ।

तालिका क्रमांक–1 के निरीक्षण उपरांत यह ज्ञात होता है कि गैर सिद्धि, एवं परिवेश के मध्य अंतक्रिया के लिए F का मान .659, df 1/382 है, जो किसी भी स्तर पर सार्थक नहीं है। अर्थात् शिक्षकों के गैर सिद्धि, परिवेश एवं उनकी अंतक्रिया का कार्यसंतुष्टि पर सार्थक प्रभाव नहीं पाया गया। अतः शून्य परिकल्पना ''शिक्षकों की गैर सिद्धि, परिवेश एवं उनकी अंतक्रिया का कार्यसंतुष्टि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया जाएगा'' को स्वीकृत किया जाता है।

H_7 शिक्षकों की गैर सिद्धि, अनुभव एवं उनकी अंतक्रिया का कार्यसंतुष्टि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया जाएगा।

तालिका क्रमांक–1 के निरीक्षण उपरांत यह ज्ञात होता है कि गैर सिद्धि, एवं अनुभव के मध्य अंतक्रिया के लिए F का मान .317, df 1/382 है, जो किसी भी स्तर पर सार्थक नहीं है। अर्थात् शिक्षकों के गैर सिद्धि, अनुभव एवं उनकी अंतक्रिया का कार्यसंतुष्टि पर सार्थक प्रभाव नहीं पाया गया। अतः शून्य परिकल्पना ''शिक्षकों की गैर सिद्धि, अनुभव एवं उनकी अंतक्रिया का कार्यसंतुष्टि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया जाएगा'' को स्वीकृत किया जाता है।

H_8 शिक्षकों क लिंग, परिवेश, अनुभव एवं उनकी अंतक्रिया का कार्यसंतुष्टि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया जाएगा।

तालिका क्रमांक–1 के निरीक्षण उपरांत यह ज्ञात होता है कि शिक्षकों क लिंग, परिवेश एवं अनुभव के मध्य अंतक्रिया के लिए F का मान 1.30, df 1/382 है, जो किसी भी स्तर पर सार्थक नहीं है। अर्थात् शिक्षकों के, लिंग, परिवेश, अनुभव एवं उनकी अंतक्रिया का कार्यसंतुष्टि पर सार्थक प्रभाव नहीं पाया गया। अतः शून्य परिकल्पना ''शिक्षकों क लिंग, परिवेश, अनुभव एवं उनकी अंतक्रिया का कार्यसंतुष्टि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया जाएगा" को स्वीकृत किया जाता है।

H_9 शिक्षकों की गैर सिद्धि, लिंग, परिवेश, अनुभव एवं उनकी अंतक्रिया का कार्यसंतुष्टि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया जाएगा।

तालिका क्रमांक–1 के निरीक्षण उपरांत यह ज्ञात होता है कि गैर सिद्धि,, लिंग, परिवेश एवं अनुभव के मध्य अंतक्रिया के लिए F का मान .449, df 1/382 है, जो किसी भी स्तर पर सार्थक नहीं है। अर्थात् शिक्षकों की गैर सिद्धि, लिंग, परिवेश, अनुभव एवं उनकी अंतक्रिया का कार्यसंतुष्टि पर सार्थक प्रभाव नहीं पाया गया। अतः शून्य

परिकल्पना "शिक्षकों की गैर सिद्धि, लिंग, परिवेश, अनुभव एवं उनकी अंतक्रिया का कार्यसंतुष्टि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया जाएगा" को स्वीकृत किया जाता है।

निष्कष

प्रदत्तों के सांख्यिकी विश्लेषण के आधार पर यह निष्कर्ष पाया गया है कि

1. शिक्षकों की गैर सिद्धि का कार्यसंतुष्टि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया गया।
2. शिक्षकों के लिंग का कार्यसंतुष्टि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया गया।
3. शिक्षकों के परिवेश का कार्यसंतुष्टि पर सार्थक प्रभाव पाया गया।
4. शिक्षकों के अनुभव का कार्यसंतुष्टि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया गया।
5. शिक्षकों की गैर सिद्धि, लिंग एवं उनकी अंतक्रिया का कार्यसंतुष्टि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया गया।
6. शिक्षकों की गैर सिद्धि, परिवेश एवं उनकी अंतक्रिया का कार्यसंतुष्टि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया गया।
7. शिक्षकों की गैर सिद्धि, अनुभव एवं उनकी अंतक्रिया का कार्यसंतुष्टि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया गया।
8. शिक्षकों के, लिंग, परिवेश, अनुभव एवं उनकी अंतक्रिया का कार्यसंतुष्टि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया गया।
9. शिक्षकों की गैर सिद्धि, लिंग, परिवश, अनुभव एवं उनकी अंतक्रिया का कार्यसंतुष्टि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया गया।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- माथुर, डा. एस. एस. – सामाजिक मनोविज्ञान, साहित्य प्रकाशन, प्रथम संस्करण
- कुलसुम, यू (1998) – शिक्षक की नौकरी की संतुष्टि पर स्कूल के संगठनात्मक माहौल का प्रभाव। साइको–लिंगुआ, 28(1), 53–56
- सेजर, एफ (2018) – समस्याग्रस्त छात्र के व्यवहार के लिए शिक्षक की धारणाः शिक्षक की बर्नआउट स्थितियों के अनुसार परीक्षाएं। शिक्षा अध्ययन के यूरोपीय जर्नल 4(6), 378–393
- वंजीरु कुक – मथिरा पूर्वी जिले में शिक्षक बर्नआउट माध्यमिक विद्यालय का प्रभाव केन्या वेथनजी अनुग्रह, विदेश मंत्रालय/450/3
- क्रूम डीबी (2003): कृषि शिक्षा के कृषि जर्नल में शिक्षक बर्नआउट 44(2), 1–13